एक और आसमान

एक और आसमान

नवल बीकानेरी

प्रात स्मरणीया पूज्या अम्मा की पुण्य स्मृति मे

माँ।
तेरे कोमल हृदय का
मै गोल शून्य हूँ—
धरती चाँद और
सूरज के साथ
सब खेल खेलूगा।
अनन्त है
शून्य के आगे भी
शून्य का अर्थ है
माँ।
तेरे कोमल हृदय का
गोल शून्य हूँ—
निरन्तर खेल खेलूगा।

अनुक्रम

आसमान का सफ़ेद दर्द

आदमी का मस्तिष्क
ससार का
सबसे बड़ा पुस्तकालय है
जिसका एक अदना सा
पाठक हूँ मै।

नवल वीकानेरी

एक और आसमान

माँ की तस्वीर मे
बन्द है
एक और आसमान
जो जब भी बरसता है
तो घर की चिड़ियाएँ
गाती हैं गीत,
घर के मोर
करते हैं शोर।

सफेद दर्द

बर्फ के टुकड़ा म है
आसमान का सफेद दर्द।

समुद्र तक मैं चलूंगा

नदी को बना लिया है
दोस्त अपना,
अब समुद्र तक मै चलूंगा!

वरसाती वस्त्र

कुछ पहाड़ो ने
पहने है—
वर्फ के
वरसाती वस्त्र
तव से
झरने नदियाँ
व झीले
जान गई हैं
एक ऐसी कहानी—
आसमान के वीच
रहने वाले तारो की
जो एक मात्र दर्शन है।

भाग्य की आँख

भाग्य की आँख मे
जड़े है कुछ सितारे।
अब तू
एक नया आकाश बना।
वायुमडल के
कुछ बादलो को
अपने पास बुला।
बूँदा-बाँदी के साथ बरसे,
धरती के सपनो की खाकर कसमे
हरे हरे खेतो पर आज
भूखे पेटो का घर बना।

नदी

आँखे भरी हैं
आओ
फिर कुछ दर्द
मैं तुम्हें तैरना सिखाऊ
यह नदी बहुत बड़ी है।

झील

झील की आँख मे
छल्लेदार पानी—
एक नये सोच के साथ
वताने लगा है
विराट प्रकृति का स्वरूप।

पानी का गाँव

पानी का गाँव है
गाँव की है मछली।
मगरमच्छ,
मेढक से पूछ ले—
पूँछ न हिला,
जबड़ा न फाड़।

बूक माँड लो

कुएँ खेलेग
नदियो के साथ,
खेत हाथ जोड़े खड़े है
बूक माँड लो।

क्यो पाप है ?

कटे पेड़ के ससार मे क्यो आग है ?
वजर भूमि के भाग्य मे क्यो दाग है ?
बेजुबान जगलो से पूछ—
जहरीली हवाओं से पूछ—
पानी के घर मे भी
पानी पीना क्या पाप है ?

झरनो की मुस्काने

पहाड़ो के
ऊँचे-ऊँचे
कधो पर
फैली हैं
झरनो की
मुस्काने—
फिर
पानीदार पँखो से
अपनी धरती को
दस्ताने
आज
पहनाने।

खूबसूरत स्वप्न

इक स्वप्न की
एक इकाई
जब बजाये डमरू—
तो फिर,
हवा बाँधे
सूखे पत्तो के घुघरू।

गोद

नदी का पानी
अपनी गोद मे
खिला रहा है
खेत ।
तुम्हारे पेट के लिए अब
नदी को कितनी फिक्र है तुम्हारी
फिर तुम को क्यो नही ?

वहुत दूर तक

शव्द
चलेंगे
दर्दों के साथ।
दूर,
वहुत दूर तक
अव
दरवाजे खुले रहने दो।

दर्द का सतोलिया

मेरा दर्द
ठीकरी पे
ठीकरी रखकर,
खेल रहा है—
सतोलिया।
प्रकृति की गेद से
ताकि
कोई दु खी आत्मा
हस पड़े।

आँसू

कुछ आँसू थे
पहले,
दुनियाँ की भीड़ मे।
कुछ आँसू हैं
अब,
तारो की भीड़ मे।
पर आज,
एक-एक आँसू है
एक और आसमान म।

सघर्ष

जब कभी गर्म रेत
गीत गाये आग पर—
तू दर्द के नग्मे छेड़
दिल के साज पर।
जबकि—
जीवन है सघर्ष
और प्राण भी अपने
फिर न रो, मुस्करा इतना
अपने इस आज पर।

सोच की प्रक्रिया

कल्पना की चिट्ठी म
चिन्तन के पते लिखे हैं
विराट प्रकृति जान जायेगी
तब मैं उसके
नन्हे-नन्हे पौधा को
अपना दोस्त बनाऊँगा।

अमृतमय शब्द

ज़हरीली स्याही से
अमृतमय शब्द
अब
शकर बन गये हैं
आज हाथ मे
डमरू लेकर
नाचने के लिए।
परम्परागत प्रकृति—
हमारा नृत्य देखेगी,
खेतो के घर से।

खेत आयेगे
सागर, नदियो
व झीलो के घर से।
शीतल प्रवाह भी
पेड़ो के घर से।
फूल आयेगे—
फूली मुस्कान भी,
पतझड़ के घर से।
कॉटे आयेगे
और
घायल प्यार भी।
तब मैं
दु:खती रग पर
हाथ रखूगा
और सोचूगा
सुख-दु:ख के
साँचे खाँचे मे
ढले हुए
आदमी के बारे मे।

तुम्हारे यहाँ आने से

अपने सोच की
पिन चुभोता हूँ,
अकसर—
अपने दिल पर
तो बात की असर का
अकस्मात्
एक बीज फूट पड़ता है।
तब,
कुछ बुद्धिजीवी
भाईचारे के भाव लेकर
मेरे पास आते है—
मै अतिथि सेवा मे
उनका
सत्कार करना नही भूलता
आओ—
बैठो,
सोच की पगडडी के राहगीरो!
आज कुछ तुम से सीखूगा।
क्योंकि तुम
नाना प्रकार के बीजो से
फसल तैयार करते हो
परहित के सच्चे दर्शन हो।
इस बार—
बहुत खुश हूँ मैं,
तुम्हारे यहाँ आने से।

कोई दु ख नही है

फिर कुछ बादल
चले गये
कश्मीर की
घाटियो
व वादियो मे बरसने।
छोड़कर
इस सूखे पतझड़ के घर को
जबकि—
सघर्ष हमारी माटी का
ऐसा हिस्सा है—
कड़ी मेहनत के सपनो का।
पसीने से उग आये फूलो का।
जिसके बीच
मै रहता हूँ।
इस बार मुझे
बादलो के चले जाने का
न बरसने का—
कोई दु ख नही है।

जन्म

रेत के गुब्बार
उड़ाती हुई
हवा—
दार्शनिक चिन्तन को
समेटे हुए,
आकाशी शून्य को
कुछ कह रही थी
तब,
मै भी वहॉ खड़ा था
धूल की उस ऑधी के साथ
खट्टी-मीठी बाते सुनने।
पर,
मेरे देखते-देखते
आकाश साफ हो गया,
आधी मिट गयी
और
कविता जन्म लेने लगी।

छोटे आसमान वाला गाँव

बर्फ की मेहदी लगाकर
कुछ सजे-सँवरे
पहाड़—
अपने गाँव का नाम
छोटा आसमान बता रहे हैं
तब मैं भी
फूलो और
हरी भरी पत्तियो के
समाज मे रहकर,
कल्पना के
वृक्षो के साथ
झूलने लगा
समाज की पीड़ा ने
बिन डसे ही
मुझे छोड़ दिया—
हॉ
छोटे आसमान वाला गाँव
व गाँव का समाज
कितना अच्छा है।
जिसने कभी नही कहा—
मुझे
राशन की लाइन मे लगने के लिए।
भूखे रहकर
दम तोड़ने के लिए।

बाँसुरिया

डूबता
उतरता
और
सरकता
जा रहा हूँ
मै स्वप्न मे
बाँसुरिया का
सच पढ़ने।
विराटता की ओर
कदम-कदम
बढ़ने।
मुझे न रोको
नीलकंठ वाले
नीले आसमान।

नृत्य

धरती के पत्थर
धरती पहने पॉवो मे,
अब शकर।
तू नृत्य करना छोड़ दे
नहीं तो
पिघल जायेगा
सारा ब्रह्माड।

अलौकिक प्यार

चैतन्य मन का
अलौकिक प्यार
तुम्हे देना चाहता हूँ
तुम्हारे हृदय-पटल पर
बस जाना चाहता हूँ
तुम अँगुली पकड़ कर
मुझे चलाओ
बहुत दूर तक—
जाना चाहता हूँ
ब्रह्माड की गाठियो मे
आकाशी तारो की
भीड़, कोलाहल मे
कविता पाठ करने।
क्या तुम अनुमति नही दोगे ?
मैं हसकर,
रोना
रोकर,
हसना—
चाहता हूँ—
बार-बार।

यात्रा

एक शोक से
श्लोक तत्त्व तक की
लम्बी यात्रा
कर रही है
'कविता'
दार्शनिक चिन्तन को सँजोये,
हवा के तारो मे
आँसू पिरोये
अब शीतल चान्दनी
मुझे ज्यादा गीला न कर
गर्म हवाये
रहती है
हमारे घरो मे
हमसे खेलने!

जीवन-मृत्यु

मैं इस जन्म के
कर्ज का
शून्य हूँ
धरती। उठाना पड़ेगा
थोड़ा तुझे बोझ।
आकाश। तुझे
समझना पड़ेगा
हर रोज़
जीवन-मृत्यु के
गीतो से आज।

शून्य

शून्य पालता हूँ
लोरियाँ देकर
बड़े चाव से
मै।
एक और शून्य मुझे दे दो,
गोल धरती का।
गोल चौराहा बनकर रह सकूं,
तुम्हारे छोटे से काम का
छोटा सा सिपाही बनकर रह सकूं।
युग युगान्तर तक का शून्य हूँ,
नाकुछ की भाँति
भ्रान्तिमान बनकर रह सकूं।
सूरज, चाँद व धरती के देश मे,
रूप परिवर्तन के वेश मे,
शून्य बनकर रह सकूं।

अपने मिज़ाज की तन्हाई

दो आँखे

मेरी दायी आँख मे
चाँद, तारे और
सूर्य की रोशनी,
मेरी बायीं आँख मे
लट्टू, ट्यूबलाइट व
प्रयोगात्मक विद्युत् की रोशनी।
फिर कहा तक सार्थक हैं
मेरी दो आँखे ?

सूरज

मेरा सूरज
बैटरी के मशाले का
खिलौना नहीं है
समय का साहूकार है,
कचहरी का जज है,
ओर
कॉलेज का प्रिन्सीपल है।

कात रहा है रोशनी

चश्मा कात रहा है
रोशनी
और रोशनी मे
देख रहा हूँ—
फिर
पत्थर की एक अहिल्या।

मैं जान गया

कटे हुए हाथ ने,
सिसकती साँस ने
जब मुझे समझाया
तो जान गया—
पीड़ाओं की झील है
ताजमहल।

गूंगी दीवारों ने,
खुली कटारों ने
जब मुझे समझाया
तो मान गया—
आदमी का लहू है
लालकिला।

पार्सल की हुई आग

तुम बातूनी हो—
कोरे बातूनी,
बात से आग लगाते हो
तुम्हारी पार्सल की हुई
आग—
कल ही डाकखाने मे पड़ी थी।

हाय रे !

रहीम के कपड़े उतार लिये,
हाय रे
राम को नगा कर दिया।
अब परहित मे—
बस खून ही खून,
गगा का पानी गन्दा कर दिया।

नया अन्दाज

मैं पेश करता हूँ
चूहे का पिजरा
तुम इसे ससद ले जाओ,
मैंने इस बार इसमे
रोटी की जगह—
नोट लटका दिये हैं।

तनहाई

आँख की नदी से
कोरे कागज़ पर
जगाई है मैंने
दिल की हाय को,
जो दो रोटी के टुकड़ो की
काँटेदार क्यारी है।
अब कौन करेगा
प्यार ?
एक के बाद, दूसरे की—
मरने की तैयारी है।
जब कल ही
भूख से मर गई—
एक पड़ौसिन की
तीन बच्चियाँ
फिर इन आँखों की,
कोरे कागज़ पर
सजेगी
कितनी नदियाँ ?
आखिर कब तक सजाता रहूँगा,
ईमानी गुलदस्तों को बनाता रहूँगा,
मैं भी समय के समझौतों की
छोटी सी इकाई हूँ—
अपने दिल की तनहाई हूँ।

भीड़

भीड़ है,
उसके घर के आगे भी
भीड़ है
गली गली,
सड़क-सड़क,
हमारे घर के आगे भी!
कुचला हुआ कुत्ता है
कहीं इसान है
तो कहीं अव
सिसकी भरती जान है
इसानियत के कोरे नारे,
हम जिये आज किसके सहारे?

भीड़ है—
उसके घर के आगे भी।
भीड़ है—
गली गली,
सड़क सड़क,
हमारे घर के आगे भी।
किसी का वच्चा गुम
किसी का लोकेट गुम,
किसी की छोरी सर्कस
किसी का बाप बेवस।
अब आसू है इतने
आग मे झुलसते,
सपने हैं इतने
हम आज जिये किसके सहारे ?
भीड़ है—
उसके घर के आगे भी।
भीड़ है—
गली गली,
सड़क सड़क,
हमारे घर के आगे भी।

आग

तुम्हारी लगाई हुई
आग
मामूली आग नही है
जल जायेगी—
गन्ने की फसल सारी।
जल जायेगी—
गेहूँ की मूँछ व दाढ़ी।
फिर तुम—

आग की गेंद को,
धरती की गेंद पर
कब तक
उछालते फिरोगे ?
धरती की गेंद
जला देगी—
तुम्हारा सर्वस्व !
ब्रह्मांड खोलेंगे,
तुम्हारे पापी लिफाफे !
सजा ए-मौत पर भी—
मारेंगे तमाचे !
तब
मेरा चिन्तन,
मेरी कविता,
वर्षों तक
गूंगी रहकर भी,
बोलेगी—
लम्बे हाथों की
परिभाषा
मेरे बच्चो !
लाड़लो !
याद कर लेना।

तुझे समझायेगी

घायल कबूतर की
फड़फड़ाहट है
हमारा दर्द
आहिस्ता,
आहिस्ता,
सुलगेगा—
उड़ने वाले
आकाशी वाज़!
न भूल,
तू—
हिम बनकर पिघलेगा
जीवन मृत्यु की आँख
अब नही
चुँधियायेगी,
तेरी आँखो मे गीड़—
तुझसे रोशनी भी
कतरायेगी!
तू समझ नही सका
अभी तक मुझे—
समय की गति तुझे
समझायेगी!

ज़िन्दगी

पजाव की आग है
आज ज़िन्दगी।
विहार की बाढ़ है
आज ज़िन्दगी।
आसाम की मार है
आज ज़िन्दगी।
कश्मीर का घाव है
आज ज़िन्दगी।
ज़िन्दगी के गमो का
नही कोई हिसाव है
ज़िन्दगी की वात है
आज ज़िन्दगी।

ख़ूनी बरसात है,
काली रात है,
साँपो की जात है
आज ज़िन्दगी।

ऐसा जाल है,
रोटी न दाल है,
सूखी खाल है
आज जिन्दगी।

ज़िन्दगी के गमों का
नहीं कोई हिसाब है
जिन्दगी की बात है
आज ज़िन्दगी।

काला चोर है,
कोरा शोर है,
ऐसा दौर है
आज ज़िन्दगी।

ऐसी दरार है,
अपनी हार है,
कोरी बहार है
आज ज़िन्दगी।

रोटी

रोटी हे जीने का मकसद,
काम का दफ्तर।
रोटी है मंजिल का इरादा,
काम का वादा।
रोटी से नही कोई अलग—
रोटी है जनजीवन की फसल
काम कर, रोटी खा और सँभल
हर गरीब है कीचड़ का कमल।
रोटी है बच्चो की दुनियॉ
प्यार की गुड़िया
रोटी है ख्वावो की परियाँ
हकीकत की घड़ियाँ।
रोटी है—
रोटी।

रोटी है रिश्ता,
रोटी है कहानी,
रोटी से नहीं है कोई अलग
रोटी है दिल की धड़कन।
इंसान की पूजा।
रोटी है—
रोटी।
रोटी है मर्म,
रोटी है धर्म,
रोटी है कर्म,
रोटी से नहीं है कोई अलग
रोटी है जनजीवन की फसल।
रोटी है मुस्कान।
रोटी है रोना,
रोटी है खून
रोटी है पसीना
रोटी है—
रोटी।
रोटी है दिन,
रोटी है तारीखे
रोटी है महीना
रोटी से नही कोई अलग
रोटी है जनजीवन की फसल।

लालकिला

लालकिले के नीचे
ऑखे अपनी मीचे,
कोई देख रहा है
ऊपर नीचे-नीचे।
बस एक हगामा
मोटरगाड़ी का
रिक्शे वाले की छाती का
सर्कस वाले के हाथी का
ठोक पीट कर ठीक करने वाले खाती का
वम विस्फोट के नये वराती का
सीधे सादे देहाती का
दुनियॉ पीटे—
लालकिले के नीचे।
खेल सारा चाकू, छुरी और आरी का
उमर की पकी दाढ़ी का
शोख मौज की यारो ताड़ी का
पहल-दूज की वारी का
इसलिए अव,
फर्स्ट प्रिफरेस है नारी का
नारी है नर की गाड़ी!

नारी फोटो खीचे—
लालकिले के नीचे।
दादा, ठग और मनमानी का
जॉन, जनार्दन व जॉनी का
थाना बस है बेईमानी का
रिश्ता बोले—
नेता बोले—
भाषण है सिर्फ नयी कहानी का
शरबत है सिर्फ पानी का
आते बोले—पानी बोले—
दुनियाँ पीटे
लालकिले के नीचे।
मिलावट ने चेहरे पर झुर्रियाँ डाली,
महगाई ने बस्ती खाली कर डाली।
भूख ने चीखे जन्म-जन्म सँभाली,
कम रुजगार ने एक मुसीबत नई पाली।
आजादी है बस ज़हर की गोली,
खायेगी जनता,
अब बोली—
कोई मेरे देश का ऐसे नक्शा खीचे,
लालकिले के नीचे।

कैलेण्डर

हर तारीख है
झूठ का दर्पण
मोत का वन्धन
फिर कहा से लाऊ
खुशियॉ
जवकि माटी का दीप हे
माटी को अर्पण।
दो तारीख को
एक बच्चा भूख से मर गया
तीन तारीख को
एक बहन विधवा हो गई।
चार तारीख को
घर ढह गया ओर सपना टूट गया।
पाँच तारीख को
एक सास ने बहू को जला दिया।
छ तारीख को
दहेज के मसले ने समाज मे आग लगादी।
सात तारीख को
महगाई और मिलावट ने सारे खून का पानी वना दिया।
आठ तारीख को
आठ ने अड़तालीस मारे और भाग गये।

नौ तारीख को
शहर बन्द और शोकसभा।
दस तारीख को
नेता हमदर्द दवाखाना उठा लाये।
ग्यारह तारीख को
एक कुर्सी ने गर्दन काटी,
बारह तारीख को
एक माँ ने अपनी छाती पीटी
तेरह तारीख को
काम करने वाले मजदूर की छुट्टी।
चौदह तारीख को
शराबी हकूमत और झूठे फैसले,
पन्द्रह तारीख को
एक मीटिंग और हजारो मसले,
सोलह तारीख को
जलती फसलें और किसानो के हल्ले।
सतरह तारीख को
भाषण का तेज चाकू व तमाशा,
अठारह तारीख को
एक बलात्कार व झूठी आशा,
उन्नीस तारीख को
कोरा झाँसा ही झाँसा
बीस तारीख को
दिनदहाड़े डकैती,

इक्कीस तारीख को
कम रुजगार रोये सारी वस्ती,
बाईस तारीख को
कही अन्धेरा कही गुल वत्ती,
तेईस तारीख को
कही चमन कही सूखी पत्ती।
चौबीस तारीख को
गले लगती बीमारियाँ व ज़हरीली दवाइयाँ,
पच्चीस तारीख को
झूठी न्यूज व झूठी तालियाँ,
छब्बीस तारीख को
छत्तीस दु ख व दु खभरी कव्वालियाँ।
सत्ताईस तारीख को
एक दुल्हन की मोत और वजती शहनाई,
अठाईस तारीख को
झूठे मुकदमे व झूठी सफाई,
उनतीस तारीख को
सिसकती दम तोड़ती तनहाई,
तीस तारीख को
सैंकड़ो लाशे सैकड़ो वधाई।
इकतीस तारीख को
बस लड़ाई-लड़ाई-लड़ाई
एक तारीख को ?

अनन्त दुःखों की धर्मशाला

देर

मानवीय देह है—
अनन्त दु खो की
एक धर्मशाला !

बाँसुरिया का सच

जीवन की अनन्तता
बारम्बार
तुम्हे दी जायेगी
जीवधारी देह के साथ
कोख के अन्धेरो मे
और मैं
तुम से मिलूँगा
क्या तुम पहचान सकोगे ?
बाँसुरिया का सच।

दर्शन की धरती

आदि अत से अनन्त तक
मैं चलूँगा,
दर्शन के गॉव मे
खोजने
निराकार आत्मा को आज।

आत्मा है
दर्शन के गॉव की धरती,
जिसमे रहता है
वनवासी राम अब भी।
जिसमे रहता है
सुदामा का श्याम अब भी।
मै आत्मज्ञान का हूँ
एकान्तिक ध्यान का हूँ—
सागर।
सबके प्यार का हूँ,
जिसमे रहता है
शून्य का रूपक अब भी।
जिसमे रहता है
रूप परिवर्तन का
आज और कल अब भी।

भरत-मिलाप का गगाजल

मैं चोर हू
चुराने आया हूँ—
तेरे घर उसके घर
और सबके घर
भरत मिलाप का गगाजल।
खूब तलाशा
नही मिला,
तो ऑखो से टपका
विरह वेदना का गगाजल।
तव
मन ही मन जान गया
यही है—
भरत मिलाप का गगाजल।

नारायण नीर

हर की पेड़ी।
पेड़ी पर
नारायण नीर।
गगा के—
गगाजल का।
एक और अर्थ बताने लगा है
तब से,
अब तक
गगा को—
मैं अपनी पाठशाला मानता हूँ।

पुकार

नीले पर्दों से
बाहर आ
फिर
मीरा के गोपाल,
सुदामा के कृष्ण।
पुकार रही है
धरती—
तू
कदम-कदम
पग-पग
आ।
मै समुद्र के साथ
नदियो को,
मौसमी हवाओं के साथ
फूलो और कलियो को
बुलाकर रखूँगा।
तेरे कानो मे
मुझसे ज्यादा
कुछ कहने के लिए
तू आ,
कदम-कदम
पग-पग
नीले पर्दों से
बाहर।

लड्डूगोपाल

लड्डूगोपाल के यहाँ
लड्डू खाने चला गया
बचपनी लॉली पॉप से
मेरा पेट भर गया है।
अब मेरा बचपन,
कान्हा का सगी
बनकर रहना चाहता है।
गेद और मारदड़ी का खेल,
राधा के पीछे कृष्ण की रेल,
बन कर रहना चाहता है।
हाँ,
मैने अपने आप को
समय के साथ
कुछ बदला है।
तुम भी बदल डालो—
बीते समय की
सब गन्दी आदतो को।
मेरे साथ चलो,
लड्डूगोपाल के यहाँ—
लड्डू खाने,
क्योंकि वहाँ
चाचा, ताऊ व
भतीजावाद नही है,
एकीकरण की धारा
प्रवाहित है वहाँ।

विश्व हृदय

हे विश्व हृदय।
तेरे लिए
छन छन कर आयेगे
आकाशी घरो से
शख और मोती।
अब तू
अपने प्रवाह मे
वहता जा—
वैरागिनी नदी
सन्यासिनी भूमि पर।
मैं तुझसे मिलूगा।
डमरू वजाता,
वीणा के तारो से
हवा के तारो को नचाता,
बसीवादन करता
जीव-मात्र को हसाता
वहता जा—
वैरागिनी नदी
सन्यासिनी भूमि पर।

भूमिपुत्र

सफर पे
खड़ा है
अनन्त
फिर एक नये
बचपन को रचने।
माँ।
अब मेरा टिफिन
तैयार कर दो।

अम्मा

दर्शनयुक्त मीरा
हृदय पटल पर बैठी
अब भी कान्हा मे
खोई खोई रहती है।
मोहन की बाँसुरिया
राधा की छीना झपटी
की घासा व घुट्टी,
बचपन से अब तक—
मेरे घर मे रहती है।
फिर अम्मा का
भक्ति और प्यार
ठाकुर का सिगार,
तुलसी चरणामृत,
माखन मिश्री का भोग,
मदिर की घटी
व दीया-बत्ती
कैसे भूलूँ।

एक रोगी के कमरे मे

तड़पन बन गई सिया—
दु ख बन गया राम।
इक लाचार बीमार आदमी का
एतबार बन गया धाम।
मैं सौ सो तीर्थ कर आया
पर हर तीर्थ से पहले
लेने लगा हूँ उसका नाम
क्योकि उसके पास है
दोनो के दोनो सीता और राम,
जिसकी आकाक्षा मे
भटका हूँ
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
रेगिस्तान से हिमगिरि तक।
वह नही मिला
पर
मिला—
एक रोगी के कमरे मे
उसकी तड़पन मे
उसके दु:ख मे।

दिल की अतल गहराइयाँ

खून, पानी,
हड्डी व
मास के
घर मे रहता है
वो।
ज्ञान, विवेक
और परहित के घर मे रहता है
वो।

सबका कान्हा
गोल धरती की
गोलाई बनकर
जिसके कुछ शहर है—
राधा, रुकमण
और मीरा जेसे !
जिसके कुछ गॉव है—
सूर, रसखान व
जायसी जैसे।
जिसके कुछ कसबे है—
सुदामा, अर्जुन
और प्रह्लाद भक्त जैसे !
इसलिए मै सदा—
दिल की अतल गहराइयो मे
भारतीय विराट दर्शन देखता हूँ !
जिसके रूप का
रूपक बाधना भी
कुछ मुश्किल है।

नवल बीकानेरी

जन्म तिथि — मिगसर (कृष्णा अष्टमी) स 2005

जन्म स्थान — बीकानेर (राजस्थान)

लेखन — 1962 ई से

— नवनीत

— हिन्दुस्तान

— मधुमती

— राजस्थान पत्रिका

तथा अन्य पत्र पत्रिकाओं एव

समाचार-पत्रो मे प्रकाशित

व आकाशवाणी बीकानेर से प्रसारित

साहित्य क्षेत्र मे योगदान —

— 'कागज का घर (काव्य)

— 'दु ख रगते हैं मन को' (काव्य)

सम्पर्क—

नवल बीकानेरी

'नवीन कुटीर

रानी बाजार बीकानेर

टैलीफोन न 27918 28639